# जिन्हें पूजा, उन्हीं से होगा मिलन...

**आपको अब कर्मकाण्ड करने, कहीं से फूल चुनने, कहीं लोटी चढ़ाने आदि की मेहनत की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। क्योंकि जिसे खुश करने के लिए आप ये सब कर रहे हैं, वो इस धरा पर आपके सामने है। कहते हैं, ना मैं मंत्र से, ना तप से, पूजा-पाठ से प्राप्त होता, मैं तो भाव और भावना से बुद्धि रूपी नेत्र के खुल जाने के बाद प्राप्त होता हूँ। बस! देर किस बात की, आप भी इस पथ पर अग्रसर हो जाओ तो ही अच्छा...!**

**मैं** रोज़ उनपर दूध की लोटी चढ़ाता हूँ। मैं रोज़ पूजा-पाठ करता हूँ, ध्यान भी लगाता हूँ, और मैंने चारो धामों की यात्रा भी की, कथा भी करता हूँ, फिर भी मुझे जो चाहिए, वो संतुष्टता मुझे अपने जीवन में अनुभव नहीं होती। कहीं न कहीं ऐसा लगता कि मैं जो कर रहा हूँ, उसका सीधा तारतम्य मेरे जीवन के साथ नहीं जुड़ पा रहा है। मन में कभी-कभी विचार आता कि जिसको मैं पूजता हूँ, याद करता हूँ और खोजता हूँ, क्या मेरी कभी उनसे मुलाकात भी होगी! क्या मैं कभी उनसे बात भी कर सकूंगा! क्या मैं अपने दिल की बात उनसे कर अपने जीवन में सुकून महसूस कर सकूंगा! मेरी दिली इच्छा है कि मेरे जीवन में सुख, शांति, प्रेम, आनंद और समृद्धि सदा प्रचुर मात्रा में बनी रहे। क्या ऐसा भी कभी समय आयेगा!

मैंने शास्त्रों एवं पुराणों में भी पढ़ा कि परमात्मा का अवतरण होता है, और वो परकाया प्रवेश कर फिर से भक्ति का फल देने इस सृष्टि पर आते हैं। भक्ति का फल 'ज्ञान', अर्थात् समझ देते हैं कि तुझे जीवन मिला ही है खुशियों से जीने के लिए।

अब वे न सिर्फ अपना परिचय देते हैं, बल्कि स्वयं हमारा भी सही परिचय हमें देते हैं। साथ ही साथ हमारा और उनके बीच का सम्बन्ध क्या है, ये भी बताते हैं। जैसे कि हमारा और उनका सम्बन्ध पिता और पुत्र का ही होगा ना! भक्ति में हम गाते ही रहते हैं, 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव...' लेकिन सम्बन्ध की पहचान न होने के कारण उनसे हम रूबरू हो नहीं पाते थे। अब वो कहता है, तुम जाने-अनजाने मुझे याद भी करते थे और पूजते भी थे। अब मैं आया हूँ, अब मुझे तथा स्वयं को वास्तविक स्वरूप में जान और पहचान कर मुझे याद करो। तुम सिर्फ पूजते ही न रहो, बल्कि मैं तो तुम्हें पूजनीय बनाने आया हूँ। तुम तो मास्टर हो ना! पिता ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों का भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं!

अब ये बात हमें समझनी होगी कि अगर किसी बड़े धनवान व्यक्ति का नाम श्यामलाल हो, और हमें उन जैसे धनवान बनना हो, तो क्या हम उसकी माला जपकर या उसकी तस्वीर की पूजा कर हम वो धन प्राप्त कर सकेंगे! नहीं ना। तो उसी तरह हमें अगर परमात्मा से मिलन मनाना है, तो सिर्फ पूजा ही नहीं, बल्कि पूज्य धनवान बनना है, तो पूज्य स्वरूप, देवत्व को अपने जीवन में धारण करना होगा। तभी तो हमारा जीवन महान होगा, ना कि सिर्फ परमात्मा को पूजने से। परमात्मा तो यही चाहता है कि मेरा बच्चा भी मेरे समान कल्याणकारी हो। जिन्हें आज तक हम पूजते आये, उन्हें सही अर्थों में जानें, उनके कर्त्तव्यों को पहचानें और उनके अवतरण के समय को भी समझें। ना सिर्फ उन्हें पूजें, बल्कि उनके बताये हुए कल्याणकारी कर्त्तव्य को भी करें। जो स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी हितकर हो।

## पुराणों ने भी माना अवतरण

अगर हम शास्त्रों में लिखी बातों को भी देखें, तो शिव पुराण में लिखा है कि, भगवान शिव ने कहा - **''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊंगा।'' आगे लिखा है कि - ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।''**

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उस द्वारा सतयुगी सृष्टि को भी रचा। इस पौराणिक उललेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

''श्रीमद्भगवद्गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था।'' सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदिदेव' और शिव ही को तो 'स्वयंभू अथवा 'आदिनाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय (सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था और योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिए ही भारत में प्राय: सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है।

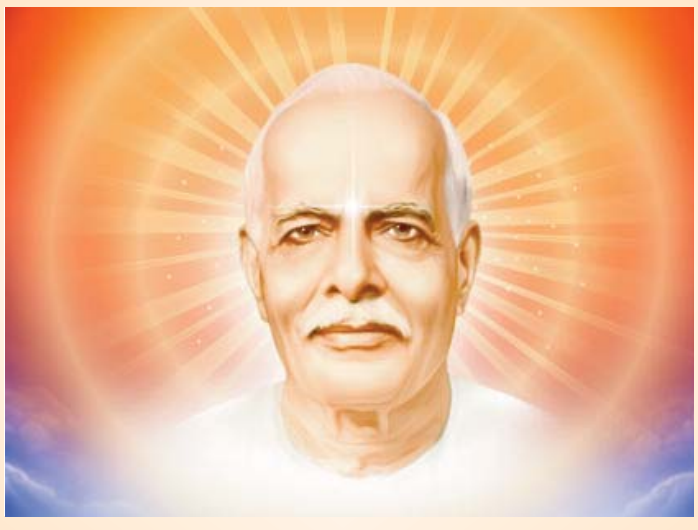

**''महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिए उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया।''** परंतु इसी श्लोक में जो 'प्रभुख्यय:' शब्द है, वो ही इस बात को सिद्ध करता है कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता-ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उसे माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता ज्ञान सुनाया होगा।

तो आज संसार के परिदृश्य पर अगर हम दृष्टिपात करें, सोचें और विचार करें तो उस निष्कर्ष बिन्दु पर अवश्य पहुँचेंगे कि आज वही अज्ञान अंधकार रूपी बादल संसार में छाये हुए हैं। इसी से निकालने के लिए परमात्मा शिव का अवतरण इस धरा पर होता है। जिसके यादगार रूप में हम शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं। तो आयें, अब हम उनसे मिलन मनायें और अज्ञान अंधकार के भटकन तथा हर दु:ख-दर्द से मुक्ति पायें। यही समय है। अभी नहीं तो कभी नहीं।

### इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन कुछ नया करने हेतु

ब्रह्माकुमारी संस्था के संदेश को पूरे विश्व में जाना चाहिए। यहाँ से जो धारा बहेगी, जो तरंगें जाएंगी, ज़रूर जन-जन को आप्लावित करेंगी, शांति प्रदान करेंगी तथा आनंद से सराबोर करेंगी। यहाँ अलौकिकता है, आत्म-भाव है, मैत्री भाव है। ना तो कोई सूक्ष्म हिंसा ना स्थूल। यहाँ भेद नज़र नहीं आता, सब अभेद है। जिनके अंदर समर्पण भाव होगा वही ब्रह्माकुमारी संस्था में आ सकते हैं। यही मेरा अनुभव है कि मुझे लगता है कि ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष घटित होना है, बस थोड़ा समय बाकी रहा हुआ है कि जब इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन बनेगा प्रेरणा श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए। जैसे गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए सबने अपनी अंगुली दी। वह अंगुली है इस अभियान में एक संकल्प में बंधने की। **-जैन मुनि अरविन्द कुमार,राजपुरा,पटियाला।**